वर्ग 'द'
कालक्रमपद्धति (Chronology)

प्रथम अन्विति
(General Introduction to Ancient Indian Chronology)
प्राचीन भारतीय कालक्रम का सामान्य परिचय

'साहित्य समाज का दर्पण होता है' अत: साहित्य तथा अन्य किसी भी प्रकार की रचना के गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए ग्रंथ विशेष के कालक्रम तथा ग्रंथ के रचनाकार का ज्ञान होना अनिवार्य हो जाता है। साहित्य में परिलक्षित तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक इत्यादि परिस्थितियों का इतिहास ही दृष्टि से ज्ञान प्राप्त करने में कालक्रम निर्धारण परम उपयोगी सिद्ध होता है। परंतु प्राचीन भारत की समृद्ध साहित्य परंपरा का कालक्रम निर्धारण ठोस प्रमाणों के अभाव के कारण सर्वदा एक अनुसंधान का विषय रहा है।

Chronology अर्थात् कालक्रम शब्द को Concise Oxford Dictionary में इस प्रकार स्पष्ट किया है- The word has how come to mean, the science of computing and adjusting time and periods and also of recording and arranging events in order of time and assignation of events to their correct dates.

अत: प्राचीन भारत के कार्यक्रम को निर्धारित करने के लिए वैज्ञानिक और प्रामाणिक सिद्धांत अपेक्षित है।

संस्कृत साहित्य की रचनाओं तथा कवियों का कालनिर्धारण करते समय अनेक समस्याएं उपस्थित होती है। यथा विभिन्न स्थानों पर एक ही नाम के अनेक कवियों का उल्लेख प्राप्त होने पर अभिप्रेत कवि का काल निर्धारण कठिन हो जाता है।

उदाहरणार्थ छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी तक कालिदास नामक नौ कवियों का उल्लेख वास्तविक कालिदास का काल निर्धारण करने में बाधा उत्पन्न करता है।

प्राचीन काल में आश्रयदाता राजा द्वारा विद्वानों और कवियों को विभिन्न उपाधियों

Scanned with CamScanner

से विभूषित करने की परंपरा थी। यथा प्राचीन तञ्जौर राज्य में अभिनव जयदेव, अभिनव पतंजलि की उपाधियों से कवियों का अभिनंदन किया जाता था। इसी प्रकार अभिनव बाण व अभिनव कालिदास का भी उल्लेख प्राप्त होता है। कालांतर में अभिनव उपाधि के लुप्त हो जाने पर कवियों के नाम की समानता के कारण मूल कवि का काल निर्धारण एक कठिन कार्य हो जाता है।

न केवल साहित्य अपितु कुछ तिथिविहीन अभिलेख भी कालनिर्धारण की समस्या उपस्थित कर देते हैं।

यथा तिथिविहीन मैहरोली (दिल्ली) स्थित लौह स्तम्भ पर उत्कीर्ण अभिलेख में किसी 'चन्द्र' नामक राजा की वीरता का गान किया गया है-

'प्रस्तुत पद्य में उल्लिखित 'चन्द्र' भारतीय इतिहास का कौन सा चन्द्र है? यह निर्णय करना विद्वानों के लिए अनुसंधान का विषय है। वस्तुत: भारतीय इतिहास में पांच शासकों के नामों के साथ 'चन्द्र' नाम और उपनाम का प्रयोग हुआ है-

1. चन्द्रगुप्त मौर्य (लगभग 321-297 ईसापूर्व)
2. कुषाणवंशीय कनिष्क का उपनाम 'चन्द्र' (खोतान की हस्तलिपि में उल्लिखित) (लगभग 78-102 ईस्वी)
3. चन्द्रवर्मन्, सुसुनिया पर्वत लेख में वर्णित पुष्करणा का राजा
4. चन्द्रगुप्त प्रथम लगभग 319-335 ईस्वी
5. चन्द्रगुप्त द्वितीय लगभग 380-414 ईस्वी

अशोक के तृतीय शिला अभिलेख का प्रारम्भ इस प्रकार है- **देवानंप्रियो पियदसि राजा एवं आह द्बादसाभिसितेन मया इदं आज्ञपितं-----**

(देवानां प्रिय: प्रियदर्शी राजा एवम् आह- द्वादश वर्षाभिषिक्तेन मया इदम् आज्ञप्तं----)

अर्थात् 'राज्यअभिषेक के 12 वर्ष पश्चात्' यहां अशोक का राज्य अभिषेक समय स्पष्ट नहीं है।

अपूर्ण अभिलेखों के कारण काल क्रम निर्धारण में बाधा उत्पन्न होती है।

इसी प्रकार विभिन्न अभिलेखों में कृतसंवत्, मालवसंवत्, विक्रम संवत्, शकसंवत् गुप्त संवत्, वलभी संवत् आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। इन संवतों का प्रारम्भ 'किसने किया तथा कब हुआ' इस तथ्य की गवेषणा कालक्रम निश्चित करने के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

प्राचीन भारतीय इतिहास के कालक्रम निर्धारण के विषय में बालगंगाधर तिलक अपनी पुस्तक 'Orion' में लिखते हैं- "The birth of Gautam Buddha, the invasion of Alxendra, The Great, the inscriptions of Ashoka, the accounts of chinese travellars and the overthrow of Buddhism and Jainism by Bhaṭṭa Kumaril and Shaṇkracharya joined with several other less important events have served to fix the chronology of the later periods of the Ancient Indian History."

कालक्रम निर्धारण के प्रसंग में प्राचीन साहित्य के विषय में कहा जा सकता है कि इन ग्रंथों को इतिहास की संरचना के उद्देश्य से नहीं रचा गया था। उनमें प्रमुख रूप से कथाप्रसंग को अपनाया गया जिनमें विभिन्न कालों के तथ्यों का सम्मिश्रण किया गया। इसी कारण इतिहास व कालक्रम के निर्धारण में वे पूर्णत: प्रामाणिक सिद्ध नहीं हुए।

विद्वानों ने प्राचीन भारत के कालक्रम को निर्धारण करने के लिए साहित्यिक व पुरातात्त्विक स्त्रोतों के साथ-साथ, विदेशियों के द्वारा दिए गए भारत विषयक विवरणों तथा ज्योतिष को मुख्य आधार बनाया है।

साहित्यिक स्त्रोत- संस्कृत साहित्य का एकमात्र ग्रंथ कल्हण विरचित राजतरंगिणी (1127-1149 ईस्वी) कश्मीर के इतिहास का अत्यंत प्राचीन काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करता है। वैय्याकरण पाणिनी का कालनिर्धारण करने के लिए वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'India as known to Paṇini' में अष्टाध्यायी के भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक तथ्यों के आधार पर पाणिनि का समय 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व निर्धारित किया है।

विदेशी विवरण- विदेशी लेखकों तथा विदेशी यात्रियों द्वारा भारत भ्रमण के समय प्राप्त भारतविषयक ज्ञान कालक्रम निर्धारण में पर्याप्त प्रामाणिक सिद्ध होता है। यूनानी (Greek), रोमन, चीनी, तिब्बती तथा मुगल यात्रियों ने अपने अपने अनुभवों को यथार्थ रूप से प्रकाशित किया। इन यात्रियों में चीनी यात्री फॉ-हियान (Fa-hian 399-414 ईस्वी) उवांग-च्वांग (yuag chawang 629-645 AD) इत्सिगं (Itsing 673-695 ईस्वी) द्वारा किया गया भारत वर्णन प्राचीन भारत के कालक्रम निर्धारण में उपयोगी सिद्ध हुआ। संस्कृत विद्वान् मुगल लेखक एलबेरूनी की (1017-1030 ईस्वी) ताखी-के-हिंद (Tahkik-i-Hind) पुस्तक काल निर्धारण में सहायक हुई। एलबेरूनी ने लिखा है कि 10वीं शताब्दी तक शिव पुराण एक पूर्ण रूप प्राप्त कर चुका था।

ज्योतिष- पाश्चात्य विद्वान् वेबर और जेकोबी ने वेद-काल निर्धारण करने में ज्योतिष को आधार बनाया। भारतीय विद्वानों में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने

Scanned with CamScanner

शताब्दी का प्रारम्भ निश्चित किया है। इसी उल्लेख से महाकवि कालिदास की भी अवर सीमा ज्ञात हो जाती है।

पट्टवाय श्रेणी के मन्दसौर अभिलेख में कवि वत्सभट्टि की काव्य शैली कालिदास विरचित ऋतुसंहार और मेघदूत से प्रभावित परिलक्षित होती है-

चलत्पताकान्यबला-सनाथान्यत्यर्थशुक्लान्यधिकोन्नतानि ।
तडिल्लता-चित्र-सिताब्भ्र-कूट-तुल्योपमानानि गृहाणि यत्र।।

मन्दसौर अभिलेख, पद्य, 10

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
संगीताय प्रहतमुरजाः स्थिग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवः तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैविशेषैः।।

मेघदूत, उत्तरमेघ, 1

अभिलेख का समय मालवा संवत् 529 (472 ईस्वी) है। इस आधार पर विद्वानों ने महाकवि कालिदास का समय चतुर्थ शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्वीकार किया है।

गुप्त संवत् 214 के शर्वनाथ के खोह ताम्रपट्ट अभिलेख में महाभारत को 'शतसाहस्त्री संहिता' कहा है। इससे ज्ञात होता है कि गुप्तसंवत् 214 (533-534 ईस्वी) तक महाभारत का वर्तमान कलेवर बन चुका था।

कभी-कभी विदेशी अभिलेख भी कालनिर्धारण में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। बोगाज-काई (एशिया माइनर) अभिलेख की खोज करने वाले पुरातत्त्ववेत्ता हूगो विंटीलर (Hugo wintiller) ने 1907 ईस्वी में वैदिक काल निर्णय में इस अभिलेख का उल्लेख किया।

अभिलेखों की तरह सिक्के भी कालक्रम निर्धारण में मार्गदर्शन करते हैं। स्वर्ण-रजत-ताम्र निर्मित सिक्कों पर उत्कीर्ण चिन्ह या प्रतीक तथा तिथियुक्त सिक्के इतिहास के काल विशेष की जानकारी देते हैं। धातु की शुद्धता और अशुद्धता उस कालविशेष की आर्थिक स्थिति को भी प्रकट करती है। यथा समुद्रगुप्त द्वारा जारी किए गए सिक्कों से उसकी समृद्धि का ज्ञान होता है।

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने अष्टाध्यायी में प्राप्त मुद्राविषयक उद्धरणों के आधार पर पाणिनी को कौटिल्य से पूर्ववर्ती सिद्ध किया है। उनके मतानुसार अष्टाध्यायी में प्राप्त होने वाले सिक्कों का नामोल्लेख (सुवर्ण, शाण, शतमान) अर्थशास्त्र में नहीं मिलता।

Scanned with CamScanner

मेहरौली लौह स्तम्भ अभिलेख में उत्कीर्ण 'चन्द्र' नामक राजा का निर्धारण विद्वानों ने लिपि के आधार पर किया है। चन्द्र नाम के पांच राजाओं में से चन्द्रगुप्त II की 'चन्द्र' नाम से साम्यता स्थापित की गई है। अभिलेख की लिपि गुप्तकालीन ब्राह्मी तथा भाषा संस्कृत है। निम्न तालिका ब्राह्मी लिपि के विभिन्न रूपों को स्पष्ट करती है। (देखें पृष्ठ 53)

इतिहास में वर्णित अनेक घटनाओं का कालक्रम निर्धारित करने में संवतों का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। विद्वानों ने प्रामाणिक गणनाओं के आधार पर यह निश्चित किया है कि विक्रम संवत् की गणना 57 ईसापूर्व, शक संवत् की गणना 78 ईस्वी, गुप्त संवत् की गणना 319 ईस्वी तथा हर्ष संवत् की गणना 606 ईस्वी को प्रारम्भ हुई थी।

• • •

Scanned with CamScanner